RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/220/2018-20
e-paper : www.srushtiagronews.com

राजपथ पर दिखी राजस्थानी संस्कृति की अमिट झलक

# सृष्टि एग्रो

वर्ष -4 | अंक-22 | जयपुर 1 से 15 फरवरी 2018 | मूल्य - 2 रुपए | पाक्षिक | पृष्ठ-8

**मुख्यमंत्री को सौंपा सीएसआई ई-रत्न ऑफ इंडिया अवार्ड**

## पारदर्शी एवं त्वरित सेवाएं उपलब्ध कराना सर्वोच्च प्राथमिकता : राजे

**जयपुर (कासं)।** सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राजस्थान को अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित करने के लिए कम्प्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को प्रदान किया गया 'ई रत्न ऑफ इंडिया अवार्ड' सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख शासन सचिव अखिल अरोड़ा ने मुख्यमंत्री को सौंपा। राजे ने इस उपलब्धि के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग की टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आईटी का अधिक से अधिक उपयोग कर प्रदेशवासियों को पारदर्शी एवं त्वरित सेवाएं उपलब्ध कराना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। विगत चार वर्षों में प्रदेश में आईटी के क्षेत्र में हुए नवाचारों ने पूरे देश में मिसाल कायम की है और राजस्थान आईटी के क्षेत्र में एक मॉडल स्टेट के रूप में उभरा है। उल्लेखनीय है कि कोलकाता में 20 जनवरी को सीएसआई के 52वें वार्षिक सम्मेलन में मुख्यमंत्री को ई-रत्न ऑफ इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया था। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख शासन सचिव अखिल अरोड़ा ने बताया कि ई-गवर्नेंस श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में राजस्थान को स्टेट कैटेगिरी अवार्ड, शिक्षा के क्षेत्र में राज ई-ज्ञान, महिला सुरक्षा के क्षेत्र में राज महिला सुरक्षा सर्वश्रेष्ठ तकनीक अवार्ड, फॉड डिटेक्शन फ्रेम वर्क के लिए सीएसआई निहिलेंट अत्याधुनिक तकनीक अवार्ड, मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के लिए ई-गवर्नेंस अवार्ड तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना को पुरस्कृत किया गया।

## इजरायल सीखेगा राजस्थान से जैतून चाय बनाने की तकनीक

**जयपुर (कासं)।** इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा है कि इजरायल राजस्थान से जैतून की प्रसंस्कृत चाय बनाने की तकनीक सीखेगा। यह बयान उन्होंने अपनी भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा राष्ट्रपति भवन में उनके स्वागत में पेश की गई जैतून चाय पीने के बाद दिया। उल्लेखनीय है कि यह चाय राजस्थान ऑलिव कल्टीवेशन लिमिटेड द्वारा राजस्थान और इजरायल के संयुक्त उपक्रम में बीकानेर में उत्पादित जैतून से बनी थी। इजरायली प्रधानमंत्री ने इस चाय की प्रशंसा की और उनसे जैतून उत्पादन और चाय प्रसंस्करण के बारे में जानकारी ली। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने बताया कि देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का स्वागत राजस्थान में बनी जैतून चाय से करना हमारे लिए गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि हमें गर्व कि जिस इजरायल से हम जैतून का प्लांटिंग मैटेरियल लाए थे, वहां के प्रधानमंत्री हमसे जैतून चाय बनाने की तकनीक सीखने के लिए कह रहे हैं। कृषि मंत्री सैनी ने बताया कि राज्य में जैतून की खेती की शुरूआत इस सरकार के गत कार्यकाल में हुई, जब मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में कृषि विशेषज्ञों का एक दल इजरायल गया था। वहां से लौटने के बाद मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने प्रदेश में जैतून की खेती करने का निर्णय लिया। 20 मार्च, 2008 को बस्सी के डिंडोल फार्म पर जैतून के प्रथम पौधे का रोपण किया गया। राज्य के 7 कृषि जलवायु खंडों में इसका प्रायोगिक रोपण किया गया। यह प्रयोग सफल हुआ और राज्य में जैतून लहलहाने लगा। राज्य में जैतून अरबेक्विना (शेष पेज दो पर)

## गणतंत्र दिवस पर मुख्यमंत्री ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी

**जयपुर (कासं)।** मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने 69वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर शुक्रवार को भरतपुर के लोहागढ़ स्टेडियम में राज्यस्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लिया। श्रीमती राजे ने स्टेडियम परिसर में अमर जवान स्मारक पर देश के अमर शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने अमर शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखा। मुख्यमंत्री ने इससे पहले लक्ष्मी विलास होटल में राष्ट्रीय ध्वज फहराया एवं हाड़ी रानी महिला बटालियन की गारद से सलामी ली।

## सम्पादकीय

# अनुबंध पर खेती की तैयारी

अनुबंध पर खेती को अनुमति देने के लिए तैयार आदर्श विधेयक के प्रारूप को कृषि मंत्रालय ने सार्वजनिक चर्चा के लिए जारी कर दिया है। लेकिन इस विधेयक के प्रारूप से किसानों और खाद्य-प्रसंस्करण उद्योग जैसे संबंधित पक्ष नाखुश हैं और उसकी वाजिब वजह भी है। यह विधेयक राज्य, जिला और पंचायत के स्तर पर अनुबंध खेती के पंजीकरण एवं नियमन का विस्तृत ढांचा तैयार करने और विवाद उत्पन्न होने की स्थिति में समाधान मंच मुहैया कराने की भी बात करता है। चर्चा का विषय यह है कि क्या केवल अनुबंध पर खेती से जुड़े मामलों के लिए अलग कानून और विस्तृत कानूनी ढांचे की जरूरत है? अनुबंध खेती के लिए अलग कानून होना इसलिए अहम है कि फिलहाल भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872 ही लागू है जिसे सभी तरह के अनुबंधों के लिए लागू किया गया था। वैसे कृषि विपणन नियमों के संदर्भ में राज्यों को मार्गदर्शन देने के लिए केंद्र की तरफ से लाए गए आदर्श कृषि उत्पाद विपणन समिति (एपीएमसी) अधिनियम में अनुबंध पर खेती को एपीएमसी कानूनों के दायरे के बाहर कानूनी मान्यता दी गई थी। कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और हरियाणा जैसे राज्यों ने अपने एपीएमसी कानूनों में संशोधन करते हुए ठेके पर खेती को मंजूरी दी हुई है लेकिन अभी यह व्यवस्था चुनिंदा फसलों के लिए ही लागू है। ऐसे में कोई गारंटी नहीं है कि ठेके पर खेती का खास कानून आ जाने से वह सभी राज्यों में लागू भी हो जाएगा। असली खतरा यह है कि कानून लागू कराने के लिए जिम्मेदार नौकरशाही को हरेक स्तर पर सॅलिस करने का जो प्रावधान इस विधेयक में किया गया है, असल में उसके नतीजे कहीं उल्टे न हों। ऐसा होने पर किसानों को सीधे कृषि-व्यवसाय से जोड़ने का जरिया बनने के बजाय अनुबंध पर खेती से लोग परहेज कर सकते हैं। अनुबंध खेती का जो मौजूदा स्वरूप है उसमें तैयार उपज की कीमत को लेकर अनुबंधित पक्षों-किसानों और प्रसंस्करण उद्योग के बीच मतभेद की प्रवृत्ति देखी जाती रही है। फसल की बुआई के समय जिस भाव पर समझौता हुआ रहता है उसके भुगतान में फसल तैयार होने पर आनाकानी की जाने लगती है। वैसे इसे कानूनी विकल्पों के अलावा भी कई तरह से निपटाया जा सकता है। फसल की कीमत पर नए सिरे से चर्चा की जा सकती है या फिर अप्रत्याशित लाभ या हानि होने पर उसे दोनों पक्षों में साझा किया जा सकता है। किसानों के मुताबिक भले ही इस कानून को उनके अनुकूल बताया जा रहा हो लेकिन असल में यह उद्योग जगत के पक्ष में झुका हुआ है। कानून कंपनियों को यह अधिकार देगा कि वे पहले से सहमत मूल्य में कटौती कर सकती हैं या कम गुणवत्ता वाली उपज होने पर उसे खरीदने से भी मना कर सकती हैं। किसानों को यह भी लग रहा है कि कंपनियां अक्सर गुणवत्ता मानकों में फेरबदल करती रहती हैं लिहाजा पालन मुश्किल है। वैसे अनुबंध खेती प्रणाली को अपने दम पर विकसित होने का मौका दिए जाने पर इनमें से कई मुद्दे अपने-आप हल हो सकते हैं। एपीएमसी के निषेधात्मक कानूनों को खत्म करने की जरूरत है ताकि कृषि-व्यवसाय कच्चे माल की आपूर्ति के लिए खुद ही उत्पादकों से संपर्क साध सकें। सीधे लेनदेन से कंपनियों को मंडियों की चुंगी और बिचौलियों का कमीशन देने से राहत मिलेगी जिससे उन्हें 10-15 फीसदी बचत हो सकती है। किसानों को भी खेत से ही फसल की बिक्री सुनिश्चित होने से फायदा होगा। एक समय के बाद जिंस उत्पादकों और उनके थोक खरीदारों के बीच कुछ उसी तरह का रिश्ता विकसित हो सकता है जैसा आज किसानों और कमीशन एजेंट एवं सूदखोरों के बीच होता है। पौधरोपण आधारित फसलों, मत्स्यपालन और दुग्धपालन से संबंधित प्रत्यक्ष विपणन प्रणालियों में ऐसा देखा भी गया है। ऐसे में कृषि मंत्रालय को अनुबंध पर खेती से संबंधित नए कानून को लेकर अपने रुख पर नए सिरे से विचार करना चाहिए।

पेज 1 का शेष...

# इजरायल सीखेगा राजस्थान...

बरनियर, फंटोयो, कोर्टिना, कोलोनाइकी, पासोलिन, पिकुअल किस्मों का पौधारोपण किया गया था। रोचक बात है कि जैतून राज्य की परम्परागत फसल नहीं होने के बावजूद भी इसका उत्पादन और प्रसंस्करण राजस्थान में सफलतापूर्वक होने लगा है।

राजस्थान को मिला विश्व की पहली जैतून की प्रसंस्कृत चाय बनाने का गौरव

सरकार ने जैतून उत्पादक किसानों की आय को दोगुनी करने के लिए इसकी पत्तियों के विपणन और प्रसंस्करण के लिए शोध शुरू किया। कई महीनों तक चले इस शोध में सामने आया कि जैतून की पत्तियों से चाय बनाई जा सकती है। विभाग ने इस पर गंभीरता से विचार किया और जैतून की चाय बनाने के लिए ओलिटिया फूड्स कंपनी ने सरकार के साथ एमओयू किया। कंपनी ने जयपुर जिले के बस्सी में जैतून पत्तियों की चाय का संयंत्र स्थापित कर विश्व की पहली प्रसंस्कृत चाय का उत्पादन शुरू किया।

कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने बताया कि विद्यासागर विश्वविद्यालय ने राज्य सरकार को भेजी अपनी रिपोर्ट में जैतून को 12 प्रकार के कैंसर सहित एचआईवी जैसे रोगों से लड़ने में कारगर माना है। शोध में पता चला है कि राज्य में उत्पादित जैतून में ट्राइटरपेनिक एसिड़ मिला है, इस एसिड का उपयोग कैंसर प्रतिरोधी दवा बनाने में होता है। जांच रिपोर्ट में पाया गया है कि 100 ग्राम जैतून फल में 60 मिलीग्राम तक यह तत्व पाया गया है। इसके साथ ही इसकी चाय भी कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के इलाज का काम करेगी। यह चाय यह एंटी ऑक्सिडेंट और एंटीडायबिटीक होने के साथ ही हमारी रोगप्रतिरोधक क्षमता को भी मजबूत करती है।

# जायद मूंग की बुआई का समय 15 फरवरी से 15 मार्च

सुरेन्द्र कुमार, अनुपमा, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता एवं डॉ. बी. एस. मीणा प्रोफेसर (प्रसार)
कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर 335001

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है जिसकी खेती समस्त राजस्थान में की जाती है। जायद मूंग की खेती पेटा कास्त वाले क्षेत्रों, जलग्रहण वाले क्षेत्रों एवं बलुई दोमट, काली तथा पीली मिट्टी जिसमें जल धारण क्षमता अच्छी होती है, में करना लाभप्रद होता है। जायद मूंग की बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च के मध्य करना उपर्युक्त रहता है जबकि कुछ किस्मों (जैसे- एस.एम.एल. 668 आदि) की बुवाई मार्च के अन्त तक भी कर सकते हैं। अंकुरण के लिए मृदा में उचित तापमान होना आवश्यक है। मूंग की फसल 60-65 दिन में पक जाती है। इसकी खेती किसान भाईयों को रबी एवं खरीफ के मध्य के खाली समय में अतिरिक्त आय देने के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने में भी सहायक है।

**उन्नत किस्में: जायद मूंग की अधिक उपज देने वाली किस्मों का चयन करें।**

जैसे- आई पी एम -2-3 सत्या (एम एच-2-15), के-851, पूसा बैसाखी, एस.एम.एल.-668, एस.-8, एस.-9, आर.एम.जी.-62, आर.एम.जी.-268, आर.एम.जी.-344 (धनु), आर.एम.जी.-492, पी.डी.एम.-11, गंगा-1 (जमनोत्री), गंगा-8 (गंगोत्री) एवं एमयूएम-2, ये किस्में 60-65 दिन में पककर 10-15 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज देती है।

**खेत की तैयारी:** इसकी बुवाई के लिये आवश्यकतानुसार एक या दो बार जुताई कर खेत को तैयार करें।

**भूमि उपचार :** भूमिगत कीटों व दीमक की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिलायें।

**बीज की मात्रा एवं बुवाई :** एक हैक्टेयर क्षेत्रफल हेतु 15-20 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। कतार से कतार की दूरी 25-30 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सेन्टीमीटर रखें।

**बीज उपचार:** मूंग के बीजों को बीज जनित बीमारियों (जैसे-उखटा, झुलसा आदि) से बचाने के लिए 3 ग्राम पारद फफूंदनाशी या कैप्टान या 2 ग्राम थाईरम या बाविस्टीन (कार्बेन्डाजिम) या 5 ग्राम इमिडाक्लोप्रिड प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें।

इसके अतिरिक्त बीजों को सर्वप्रथम राइजोबियम कल्चर (200 ग्राम के 3 पैकेट प्रति हैक्टेयर बीज के लिए) फिर पी.एस.बी. कल्चर (200 ग्राम के 3 पैकेट प्रति हैक्टेयर बीज के लिए) तथा अन्त में जैविक फफूंदनाशी ट्राइकोडर्मा 6-8 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से विभागीय सिफारिश के अनुसार उपचारित कर बुवाई करें।

**राईजोबियम कल्चर से बीज उपचार की विधि:** बीजों को राईजोबियम से उपचारित करने हेतु एक लिटर पानी व 250 ग्राम गुड़ को घोलकर गर्म करें तथा ठंडा होने पर 200 ग्राम के 3 पैकेट शाकाणु संवर्ध (कल्चर) मिला दें। इस मिश्रण की एक हैक्टेयर में बोये जाने वाले बीजों पर भली-भाँति परत चढ़ा दें व छाया में सुखाकर बुवाई करें।

**खाद एवं उर्वरक:** मूंग की फसल में उर्वरक प्रबंधन भी बहुत आवश्यक है। बुवाई पूर्व 250 किलो जिप्सम व बुवाई के समय 25 किलो जिंक सल्फेट को ऊरकर खेत में डालें। सल्फर एवं जिंक के प्रयोग से दाने सुडौल एवं चमकदार बनते हैं। मूंग की फसल में 90 किलो डीएपी एवं 10 किलो यूरिया अथवा 250 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट व 45 किलो यूरिया बुवाई के समय ऊरकर देवें।

**निराई-गुड़ाई:** मूंग की फसल में बुवाई पूर्व फ्लूक्लोरेलिन 750 मिलीलिटर का छिड़काव कर रैक से जमीन में मिलायें अन्यथा बुवाई के 25-30 दिन बाद निराई-गुड़ाई कर देवें, इससे खरपतवार की रोकथाम के साथ-साथ नमी संरक्षण भी होता है।

**सिंचाई:** मूंग की फसल में फूल आने से पूर्व (30-35 दिन पर) तथा फलियों में दाना बनते समय (40-50 दिन पर) सिंचाई अत्यन्त आवश्यक है। तापमान एवं भूमि में नमी के अनुसार आवश्यकता होने पर अतिरिक्त सिंचाई देवें।

**फसल संरक्षण :** मूंग की फसल में यदि मोयला, हरा तैला, फली छेदक का प्रकोप हो तो अजादिरेक्टिन 0.03 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लिटर या एजादिरेक्टिन 0.03 प्रतिशत ई.सी. 750 मिलीलिटर 300 मिलीलिटर प्रति हैक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मूंग में चित्ती जीवाणु रोग का प्रकोप होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 20 ग्राम तथा सवा किलो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का प्रति हैक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मूंग में पीत शिरा मोजेक रोग होने पर रोगग्रसित पौधों को उखाड़ दें एवं डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लिटर दवा को 300 लिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यक हो तो 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहरायें।

छाछ्या रोग की रोकथाम हेतु प्रति हैक्टेयर ढाई किलो घुलनशील गंधक अथवा एक लिटर कैराथियॉन (0.1 प्रतिशत) के घोल का पहला छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही एवं दूसरा छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर करें।

पीलिया रोग के लक्षण दिखाई देते ही 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब या 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

**कटाई एवं गहाई :** मूंग की फसल पकने पर फलियों के चटकने से पहले काट लें। खलिहान में 10-15 दिन फसल अच्छी तरह सुखाकर गहाई कर दाना निकालें।

इस प्रकार जायद में उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर 10-15 क्विंटल प्रति हैक्टर मूंग की उपज प्राप्त की जा सकती है।

**जायद मूंग फसल के लिए बिजाई के समय ध्यान देने योग्य बातें :-**

- बिजाई पूर्व खेत की मिट्टी की जांच करावें।
- फसल चक्र अपनावें। लगातार एक ही फसल की बिजाई न करें।
- बिजाई के लिए उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज प्रयोग में लावें।
- बिजाई हेतु बीज की सिफारिश की गई मात्रा प्रयोग करें।
- भूमि व बीज उपचार अवश्य करें।
- जैव उर्वरकों (कल्चर) का प्रयोग करें।
- उर्वरकों की सिफारिश की गई मात्रा उचित समय पर प्रयोग करें। बेसल प्रयोग अवश्य करें।
- फसल की प्रारम्भिक अवस्था में खेत को खरपतवार विहीन रखें।
- समय पर प्रथम सिंचाई लगावें।
- फसल बीमा करवायें।
- तिलहनी व दलहनी फसलों में सिंगल सुपर फॉस्फेट (उर्वरक) का प्रयोग करें।
- डी.ए.पी. उर्वरक का प्रयोग केवल बेसल के रूप में करें।
- कीटनाशक दवाइयों को मिलाकर छिड़काव न करें।
- बीज/खाद को खरीदते समय बिल अवश्य लें।

# मिर्च में समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन

अर्जुन लाल चौधरी, कमलेश कुमार जाट,
ममता देवी चौधरी एवं डॉ. राम गोपाल सामोता
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर
( जयपुर )-303329

**प्रमुख कीट**

**थ्रिप्स:** थ्रिप्स छोटे और पतले कीट होते हैं और नर्सरी के साथ मुख्य खेत में भी दिखाई देते हैं और अपने पूरे जीवनभर वे फसल को प्रभावित करते हैं। व्यस्क और निम्फ दोनों फसल को नुकसान पहुंचाते हैं तथा पत्ती के ऊतकों के चिथड़े कर देते हैं और रस को चूसते हैं। नर्म प्ररोहों, कलियों और फूलों पर आक्रमण किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप वे मुड़ जाते हैं और विरूपित हो जाते हैं, पत्तियों का ऊपरी हिस्सा भी मुड़ जाता है। ग्रीष्म मौसम में नाशीजीवों का संक्रमण बढ़ जाता है।

**चेंपा:** ये मुख्यत: शुष्क, बादलों वाले ठण्डे और आर्द्र मौसम की स्थितियों में प्रकट होते हैं जबकि भारी वर्षा चेपा की कॉलोनियों को धो डालती हैं। ये फरवरी से अप्रैल के दौरान तेजी से बढ़ते हैं। ये नर्म प्ररोहों और पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देते हैं। रस को चूसते हैं तथा पौधों की वृद्धि को कम करते हैं। ये मीठा पदार्थ छोड़ते हैं जो कि चींटियों को आकर्षित करता है और काली फफूंद विकसित हो जाता है।

**तम्बाकू की इल्ली:** तम्बाकू की इल्ली का वयस्क भूरे रंग का होता है। दूसरे और तीसरे इनस्टार के लार्वे कैलिक्स के पास छेद बनाकर मिर्च की फलियों में प्रवेश करते हैं और मिर्च के बीज से अपना भोजन प्राप्त करते हैं। प्रभावित फलियां गिर जाती हैं या सूखने पर सफेद रंग की हो जाती हैं। ये आदत से रात्रिचर होते हैं लेकिन इन्हें दिनके समय भी देखा जा सकता है।

**फल बेधक :** यह कीट वर्षा काल के बाद वाले मौसम में (अक्टूबर से मार्च) बहुत सक्रिय होता है जो कि तीखी मिर्च की फसल की पुनरुत्पादक स्थिति भी है। लार्वा फलों का बेधन कर उन्हें क्षतिग्रस्त करता है और फलियों के भीतरी हिस्सों से अपना भोजन प्राप्त करता है। शिमला मिर्च में अप्रैल से जून के समयमें फलों को नुकसान पहुंचाता है।

**रोग**

**डैम्पिंग आफ :** यह रोग खराब निकासी वाली और आर्द्रता वाली भारी मिट्टी को सबसे अधिक क्षतिग्रस्त करता है। बीज सड़ सकता है और मिट्टी से निकलने से पहले ही पौधे मर सकते हैं। नए पौध/मृदुलण और कालर क्षेत्र में ऊतकों के नष्ट होने के कारण अलग-अलग खण्डों में मर जाते हैं।

**पर्ण चित्ती:** पत्तियों पर विक्षति भूरी और वृत्ताकार होती है जिसके बीच में छोटे से बड़े हल्के धूसर रंग के और गहरे भूरे किनारे होते हैं। गंभीर रूप से संक्रमित पत्तियां पकने से पहले ही गिर जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप उपज में कमी होती है।

**डाई-बैक और एन्थाक्नोज:** रोग के लक्षण अधिकांशत: पके हुए फलों पर दिखाई देते हैं और इसलिए इस रोग को पके हुए फलों का सड़न भी कहा जाता है। चित्तियां सामान्यत: वृत्ताकार, जलमग्न और काले किनारे के साथ डूबी हुई होती हैं। जैसे-जैसे रोग बढ़ता है ये चित्तियां फैलती हैं और इनसे गहरे फलन के साथ निश्चित मार्किंग बनती है। अनेक चित्तियों वाले फल पकने से पहले ही गिर जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उपज का भारी नुकसान होता है। कवक फल के डंठलों पर भी आक्रमण कर सकते हैं और तने के साथ-साथ फैल सकते हैं जिससे पक्षमारी के लक्षण बन जाते हैं।

**फ्यूजेरियम मुर्झान :** यह रोग अधिकांशत: खराब निकासी वाली मृदाओं में होता है पौधे के मुरझाने तथा पत्तियों के ऊपरी तरफ और अंदर की तरफमुड़ने से फ्यूजेरियम मुरझान का पता चलता है। पत्तियां पीली होकर मर जाती हैं। सामान्यत: यह रोग खेत के नीचे वाले पानी रूकने वाले क्षेत्रों में दिखाई देता है और जल्दी ही सिंचाई के साथ पानी की नाली के साथ फैल जाता है। उपरोक्त समय तक जब भूमि के ऊपर लक्षण दिखाई देने लगते हैं तब तक पौधे की संवहनी प्रणाली विशेष रूप से निचले तने और जड़ें भी विरूपित होने लगते हैं।

**चूर्णिल फफूंद :** यह रोग तीखी मिर्च में बहुत आम रोग है। रोग शुष्क और आर्द्र दोनों प्रकार के मौसम स्थितियों के तहत गर्म जलवायु में पैदा होता है। पत्तियों की ऊपरी सतह पर हरिमाहीन धब्बे दिखाई देने लगते हैं। पत्तियों की निचली सतह पर विक्षतियां सफेद से धूसर चूर्णिल बढ़वार से ढंक जाती हैं। यह रोग पुरानी से नई पत्तियों की ओर बढ़ता है और पर्ण-समूह का झड़ना इसका सबसे प्रमुख लक्षण है।

**विषाणु काम्प्लैक्स :** इस विषाणु के कारण पत्तियों का आकार छोटा हो जाता है जिससे पौधे बौने दिखाई देने लगते हैं। रोग बढ़ने की अवस्था में पौधों की बढ़वार रूकी हुई दिखाई देती है और पौधा झाड़ी जैसा दिखाई देने लगता है व फूलों का उत्पादन भी कम हो जाता है। विकृत बीजों के साथ फल छोटे आकार के पैदा होते हैं। गंभीर संक्रमण होने पर फसल का पूरी तरह से नष्ट होना समान्य है।

**कुटकी**

**चौड़ी कुटकी :** यह नवम्बर के महीने में फैलती है। निम्फ और वयस्क पत्तियों से रस चूसते हैं। प्रभावित पत्तियां सिरों से नीचे की ओर मुड़ जाती हैं और उनकी आकृति मुड़ी हुई नौका के रूप में बन जाती है। पर्ण वृन्त दीर्घीकृत हो जाते हैं और छोटी पत्तियां दंदानेदार बन जाती हैं और वे झाड़ियों के रूप में दिखाई देती हैं। पत्तियों के घटे हुए मुतान के साथ वे गहरे धूसर रंग की हो जाती हैं, पौधों में पुष्पन रूक जाता है और उपज में बहुत अधिक कमी हो जाती है।

**झुलसा:** यह शिमला मिर्च का एक क्रियात्मक विकार है जिसमें फल सूर्य की सीधी किरणें पड़ने के कारण प्रभावित होते हैं। उन पर सफेद रंग के परिगलित चकते बन जाते हैं व जो हिस्सा सीधे सूर्य के संपर्क में आता है उसकी उपरी सतह पतली और सूखी और कागज जैसी हो जाती है। एनएसकेई 5 प्रतिशत का छिड़काव 2-3 बार करें। यदि थ्रिप्स और सफेद मक्खी की संख्या फिर भी अधिक रहे तब फेंप्रोपथ्रिन 30 ईसी का 250-340 मिली प्रति हे.750-1000 लीटर पानी अथवा पाइरीप्रोक्सिफेन 10 ईसी का 500 मिली अथवा स्पिनोसेड 45 एससी का 160 ग्रा प्रति हे.500 ली (थ्रिप्स के लिए) अथवाफिप्रोनिल 5 एससी का 800-1000 मिली प्रति हे. की दर से 1000 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।

-यदि थ्रिप्स और कुटकियां दोनों एक साथ दिखाई दें तो फेनप्रौथ्रिन 30 ईसी का 250 मिली प्रति हे. अथवा इथियोन 50 ईसी का 1.5 ली प्रति हे. की दर से छिड़काव उपयोगी होता है।

-पर्ण कुंचन रोग/मोजेक काम्प्लैक्स से प्रभावित पौधों की आवधिक रूप से छटाई करते हुए उन्हें नष्ट करना चाहिए।

-अण्डे देने के दौरान वयस्कों की निगरानी के लिए एच. आर्मीजेरा/एसलियूटेरा के लिए 5 प्रति हे. की दर से फैरोमोन जाल लगाएं।

-फल बेधक (एच. आर्मीजेरा) के लिए 1.5 लाख प्रति हे. की दर से ट्राइकोगर्मा प्रजाति के परजीवी अण्डों को आवधिक रूप से छोड़ें।

-प्रारंभिक स्थिति में या जब और जैसे आवश्यकता हो तो एचएएनपीवी/सएलएनपीवी (250 एलई प्रति हे.) (2×109 पीओबी) के 2-3 छिड़काव करें।

-फूल एवं फल की प्रारंभिक अवस्था के दौरान फल बेधक के लिए स्पिनोसेड 45 एससी का 60 मिली अथवा एमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी का 200 ग्रा अथवा इन्डोकसकार्ब 14.5 एससी का 400 मिली प्रति हे. की दर से 500 लीटर पानी के साथ केवल आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। एच आर्मिजेरा केवल छोटे लार्वे के रूप में ही प्रभावी हैं। इन कीटनाशकों का शाम के समय करना ही उचित है।

-बेधक के कारण क्षतिग्रस्त फलों को समय-समय पर हटाकर उनको नष्ट किया जाना चाहिए।

-फल सड़न और डाई बैक के प्रबंधन हेतु मेन्कोजेब 75 डब्ल्यूपी अथवा प्रोपिनेब 70 डब्ल्यूपी का 1.5-2.0 किग्राप्रति हे. की दर से 750-1000 लीटर पानी के साथ या जिनेब 70 डब्ल्यूपी का 0.5 प्रतिशत की दर से सुरक्षात्मक छिड़काव व आवश्यकता आधारित डायफेनकोनाजोल 25 ईसी का 0.05 प्रतिशत अथवा मायक्लोब्युटानिल 10डब्ल्यूपी का 0.04 प्रतिशत या केप्टान 70 प्रतिशत+हेक्साकोनाजोल 5 डब्ल्यूपी का 500-1000 ग्रा प्रति हे. की दर से 500 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।

-चूर्णिल आसिता के प्रबंधन के लिए सल्फर 52 एससी का 2 ली प्रति हे. की दर से 400 लीटर पानी में या सल्फर 80 डब्ल्यूपी का 3.13 किग्रा प्रति हे. की दर से 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।

-चूर्णिल आसिता और फल सड़न के प्रबंधन के लिए आवश्यकता आधारित हेक्सकोनाजोल 2 एससी का 3ली प्रति हे. या टेब्युक्युनाजोल 25.9 प्रतिशत एम/एम ईसी का 500 मिली या एजोक्सीट्रोबिन 11 प्रतिशत+टेब्युक्युनाजोल 18.3 प्रतिशत एससी डब्ल्यू/डब्ल्यू का 600-700 मिली प्रति हे. की दर से 500-700 लीटरपानी के साथ छिड़काव करें।

-डाई-बैक के लिए पी. फ्लोरोसेंस (जैव रासायनिक दवाइयां) का सामान्य छिड़काव भी किया जा सकता है।

-विभिन्न रोगों के लिए पी. फ्लोरोसेंस या ट्राइकोडर्मा (जैव नाशकनाशीजीव) का सामान्य रूप से छिड़काव किया जा सकता है।

-फ्यूजेरियम मुर्झान प्रबंधन के लिए खेत तैयार करते समय मृदा में घूरे की खाद (250 क्विग्रा) में विश्वसनीय स्त्रोत से लिए गए ट्राइकोडर्मा (5 किग्रा प्रति हे.) को मिला कर प्रयोग करें।

-यदि मुर्झान प्रतिवर्ष नियमित रूप से होता है तो फसल चक्रण किया जा सकता है।

**मित्र कीटों का संरक्षण**

मिर्च में नाशीजीवों के प्रचलित रूप से दिखाई देने वाले प्राकृतिक शत्रुओं को रासायनिक दवाईयां के अवांछित और अत्यधिक छिड़कावों से बचाना चाहिए।

# अजीतगढ़ के किसान जगदीश ने विकसित की गोभी की नई किस्म

**सीकर (विसं)।** जैविक खेती पद्धति के आधार पर 86 किलो का कद्दू, 25 किलो की गोभी व 7 फीट की लौकी जैसे सब्जियां उगाकर रिकॉर्ड बनाने वाले जगदीश पारीक ने इस बार फिर रिकॉर्ड बनाया है। इस बार उनके द्वारा तैयार किए गोभी के बीज को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। गोभी के इन बीजों को दुर्गापुरा स्थित कृषि अनुसंधान संस्थान (रारी) के वैज्ञानिकों ने न सिर्फ परीक्षण में खरा पाया, बल्कि इसे अन्य बीजों की तुलना में श्रेष्ठ भी घोषित किया है। गोभी के उत्पादन में नवाचार के तहत इस बीज पर जगदीश पारीक पिछले 30-35 साल से काम कर रहे हैं।

**बीज श्रेष्ठ घोषित :** दुर्गापुरा स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक व उद्यानिकी के प्रोफेसर एंड हैड डॉ. वी.एस. यादव, उद्यानिकी के प्रोफेसर डॉ. बी.डी. यादव और डॉ. वाई.के. शर्मा की टीम ने किसान जगदीश पारीक के तैयार किए बीजों का परीक्षण किया।

डॉ. वी.एस. यादव ने बताया कि दो साल के परीक्षण के बाद जगदीश पारीक के 'अजीतगढ़ सलेक्शन' नामक बीजों को श्रेष्ठ पाया गया है। इस बीज से उत्पादित गोभी की गुणवत्ता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इससे 184.53 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक फसल ली जा सकती है।

### कई सम्मान ले चुके हैं पारीक

बड़े आकार के कद्दू, 25 किलो की गोभी, सात फीट की लौकी, एक फीट लंबे बैंगन सहित अन्य सब्जियों के उत्पादन से जगदीश पारीक को कई सम्मान और सराहना मिल चुकी है। राष्ट्रपति से लेकर राज्यपाल और मुख्यमंत्री से लेकर अधिकारियों तक को अपने उत्पाद से रूबरू करवा चुके हैं। इनके प्रयासों की सब जगह सराहना मिली है।

# पारा चढ़ने से फसलों को पानी की दरकार

**जयपुर (कासं)।** मौसम में सर्दी का प्रभाव अचानक कम होना फसलों के लिए नुकसानदायक है। इससे फसलों में फूल आने या फली बनने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। आगेती फसलों में इससे दाना प्रभावित हो सकता है। इसका असर उत्पादन और उत्पादकता दोनों पर पड़ता है। तापमान में हो रही बढ़ोतरी के बीच किसानों को फसलों में सिंचाई करने की सलाह दी गई है। साथ ही चना, सरसों और मटर को फसल को बचाने के लिए मेलाथियॉन 2 प्रतिशत या क्वेनालफोस 25 ईसी का छिड़काव करने की सलाह भी दी गई है। रात में सर्दी का असर कम होने लगा है। इससे गेहूं, चना और सरसों की फसल के साथ मेथी, धनिया व जीरा और सब्जियों पर असर आने की आशंका है। दुर्गापुरा स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान (रारी) के वैज्ञानिकों ने किसानों को तापमान बढ़ने की दशा में सिंचाई पर ध्यान देने की आवश्यकता जताई है।

**चना व मटर :** दुर्गापुरा स्थित कृषि अनुसंधान संस्थान (रारी) में सहायक प्राध्यापक (शस्य) डॉ. ओमप्रकाश मीना बताते हैं कि तापमान बढ़ने पर चना और देरी से बुआई वाले मटर में चना फलीछेदक का असर हो सकता है। इस कीट से बचाव के लिए बरसाती पानी पर निर्भर रहने वाले खेतों में फलीछेदक का प्रभाव दिखने पर मेलाथियॉन 2 प्रतिशत या कार्बोरिल 5 प्रतिशत 20-25 किलो प्रति हैक्टेयर की से भुरकाव करना चाहिए। वहीं, सिंचित क्षेत्र वाले खेतों में मेलाथियॉन 50 ईसी 1.25 एमएल प्रति लीटर की दर से या क्वेनालफोस 25 ईसी 1.00 एमएल प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

**गेहूं और चना :** समय पर बुआई और मिश्रित देरी वाली बुआई वाले वाले गेहूं में तीसरी सिंचाई करनी चाहिए। वहीं देरी से बुआई वाले गेहूं में दूसरी सिंचाई कर देनी चाहिए। फलीछेदक लगने की दशा में चने में सिंचाई जरूरी है।

**मेथी, मटर, जीरा व धनिया :** मेथी, मटर, जीरा व धनिया में ऐसी दशा में पाउडरी मिल्ड्यू (छाछ्या या सफेदा) रोग से प्रभावित होने का अंदेशा रहता है। पाउडरी मिल्ड्यू का असर पत्तियों पर दिखने पर कारथियॉन 1.0 एमएल या कालाक्सिन 1.0 एमएल प्रति लीटर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

# पंजीकृत गौशालाओं को आर्थिक सहायता

**जयपुर।** राज्य सरकार ने गौशालाओं एवं कांजी हाउस में संधारित किये जा रहे पशुओं के वर्ष 2017-18 के लिए आर्थिक सहायता स्वीकृति जारी की। पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. जे.आर. बैरवा ने बताया कि राज्य सरकार ने कांजी हाउस एवं गौशालाओं में संधारित किये जा रहे पशुओं के लिए चालू वित्तीय वर्ष के लिए सहायता राशि स्वीकृत जारी की है।

उन्होंने बताया कि 31 दिसम्बर 2015 से पूर्व पंजीकृत गौशालाओं को जिनमें न्यूनतम 200 गौवंश संधारित किये जा रहे है। उनके लिए बड़े गौवंश को 31 रुपये एवं छोटे पशु को 16 रुपये प्रतिदिन की दर से माह जनवरी, फरवरी, मार्च, 2018 के लिए सहायता राशि स्वीकृत की है।

# राज्यपाल ने किया उल्लेखनीय कार्य करने वालों को सम्मानित

**भरतपुर (विसं)।** राज्यपाल कल्याण सिंह ने भरतपुर के लोहागढ़ स्टेडियम में आयोजित राज्यस्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में झण्डारोहण किया। राज्यपाल सिंह ने समारोह में खुली जिप्सी में सवार होकर परेड का निरीक्षण किया व जनसमूह का अभिवादन स्वीकार किया। इसके बाद सिंह ने शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को नमन किया। समारोह में मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे भी मौजूद रहीं। कार्यक्रम में हाडीरानी महिला बटालियन, 14वीं बटालियन आरएसी, पंजाब पुलिस, जिला पुलिस भरतपुर, जीआरपी, एसडीआरएफ और ईआरटी, कारागृह, बॉर्डर होमगार्ड, अरबन होमगार्ड भरतपुर, एनसीसी, शारीरिक प्रशिक्षण, एसपीसी और स्काउट गाइड के एक-एक प्लाटून ने परेड में भाग लिया। परेड में आर्मी बैण्ड ने भी भाग लिया। परेड का नेतृत्व सहायक पुलिस अधीक्षक (प्रोबेशन) आरपीएस, जयपुर मृदुल क छावा ने किया। स्टेडियम में भरतपुर शहर के विभिन्न विद्यालयों के 1200 छात्र-छात्राओं और 120 लोक कलाकारों ने कोरियोग्राफर भानु भारती के नेतृत्व में सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरण किया। इस मौके पर मुख्य सचिव एनसी गोयल सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी मौजूद थे।

# सहकारिता विभाग के 20 अधिकारी हुए पदोन्नत

**जयपुर (कासं)।** राज्य सरकार ने सोमवार को आदेश जारी कर सहकारिता विभाग के 20 अधिकारियों को अतिरिक्त रजिस्ट्रार (सीनियर स्केल), अतिरिक्त रजिस्ट्रार एवं संयुक्त रजिस्ट्रार के पद पर पदोन्नत किया है। जिसमें से 4 अधिकारियों को अतिरिक्त रजिस्ट्रार से अतिरिक्त रजिस्ट्रार (सीनियर स्केल), 6 अधिकारियों को संयुक्त रजिस्ट्रार से अतिरिक्त रजिस्ट्रार एवं 10 अधिकारियों को उप रजिस्ट्रार से संयुक्त रजिस्ट्रार के पद पर पदोन्नत किया गया है। आदेशानुसार अतिरिक्त रजिस्ट्रार सर्व आलोक भटनागर, सोहन लाल लखानी, दुर्गा लाल बलाई एवं मोहम्मद असलम को अतिरिक्त रजिस्ट्रार (सीनियर स्केल), संयुक्त रजिस्ट्रार सर्व पंकज अग्रवाल, संजय माथुर, महावीर प्रसाद यादव, गणेश लाल गुप्ता, उत्तम चंद तोषावड़ा एवं बृजेन्द्र राजोरिया को अतिरिक्त रजिस्ट्रार तथा उप रजिस्ट्रार सर्व योगेन्द्र कुमार जैन, संजय कुमार पाठक, बाबू लाल मीणा, ओम प्रकाश मीणा, सुरेन्द्र सिंह, कुमार विवेकानंद यादव, दिनेश कुमार शर्मा, मदन लाल गुर्जर, मंगत राम खन्ना एवं राधेश्याम चौहान को संयुक्त रजिस्ट्रार के पद पर पदोन्नति दी गई है।

# किसान खुद बना रहे जैविक खाद व दवाएं

**मोहकमपुरा (बांसवाड़ा)।** रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक से खेतों की उर्वरा शक्ति कमजोर हो रही है। ऐसे में बांसवाड़ा जिले में कृषि विभाग की ओर से चलाए जाने वाली परंपरागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाय) के तहत जैविक खेती अपनाकर अंतिम छोर पर बसे कुशलगढ़ की 17 ग्राम पंचायतों के 1750 किसान 35 कलस्टर बने समूह के रूप में लाभान्वित हो रहे हैं। जैविक खेती की शुरुआत कुशलगढ़ क्षेत्र में दो वर्ष पहले हुई। इसमें जुड़े एक समूह के 50 किसानों की प्रति किसान एक एकड़ जमीन में जैविक खेती का प्रयोग फिलहाल शुरू किया गया है, जिसमें जैविक खाद, जैविक दवाई, केंचुआ खाद किसान खुद बनाते हैं। परंपरागत कृषि विकास योजना के तहत कुशलगढ़ की टांकाला, बिलीपाड़ा, लोहारिया, डूंगरीपाड़ा, खेड़पुर, रामगढ़, बगायचा, खजूरा, कोटड़ा, शोभावटी, झीकली, बड़वास छोटी, बड़वास बड़ी, टिमेडा, टुम्मठ, चरकनी, सारण पंचायम का चयन हुआ है। जैविक खेती अभियान के तहत आदिवासी किसान जुड़ रहे हैं। दो साल पूर्व खेड़पुर पंचायत के नागदा बड़ी गांव के किसान कैलाश मइड़ा को जैविक खेती करने पर श्रेष्ठ किसान के रूप में नवंबर 2017 में उदयपुर में आयोजित कृषि विभाग के ग्राम कार्यक्रम में संभागस्तर पर सम्मानित कर प्रमाणपत्र के साथ 21 हजार रु. का चेक देकर सम्मानित किया जा चुका है।

# फसल कटाई प्रयोग प्रशिक्षण में कृषि संबंधी दी जानकारी

**सवाई माधोपुर (विसं)।** कलेक्टर एवं सांख्यिकी विभाग की ओर से कलेक्ट्रेट सभागार में फसल कटाई प्रयोग प्रशिक्षण तथा रबी एवं गुणवत्ता परख सटीक कृषि अनुमान तैयार करने के लिए कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय जयपुर के सहायक निदेशक धनश्याम अग्रवाल ने उपस्थित अधिकारियों से कहा की प्रधानमंत्री फसल बीमा के तहत आयोजित फसल कटाई प्रयोगों को गुणवत्ता पूर्वक किया जाए। सहायक निदेशक आर.एस. जाट ने आबंटित प्रयोगों को समय रहते संपादित किए जाने की बात कही। तहसीलदार ने कृषि एवं राजस्व विभाग के समन्वय से कार्य संपादन का आश्वासन दिया। सांख्यिकी अधिकारी ओ.पी. गुप्ता ने फसल कटाई की प्रायोगिक जानकारियां दी। कृषि सांख्यिकी अधिकारी प्रमोद कुमार ने कृषि आकंड़ों के सटीक अनुमान के लिए कृषि एवं राजस्व विभाग के समन्वय से कार्य करने के निर्देश दिए, जिससे कृषि परिदृश्य को सही जानकारियां मिल सके।

# किसानों को बताई टिंडे की उन्नत खेती की तकनीक

**सूरवाल (विसं)।** टिंडा सब्जी की बोआई का समय नजदीक होने पर किसानों द्वारा इस सब्जी को उगाया जा रहा है। ऐसे में कृषि विज्ञान केन्द्र पर वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने किसानों को टिंडा की उन्नत खेती करने के तरीके बताए। कृषि पर्यवेक्षक विजय जैन ने बताया कि टिंडा विभिन्न प्रकार की भूमियों में उगाया जा सकता है, लेकिन उचित जलधारण क्षमता वाली जीवांश युक्त हल्की दोमट भूमि इसकी सफल खेती के लिए सर्वोत्तम मानी गई है। नदियों के किनारे वाली भूमि भी इसकी खेती के लिए उपयुक्त रहती है। कुछ अम्लीय भूमि में इसकी खेती की जा सकती है। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। इसके बाद 2-3 बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएं। टिंडे की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। टिंडा का बोआई गर्मी और वर्षा में की जाती है। अधिक वर्षा और बादल वाले दिन रोग व कीटों के प्रकोप को बढ़ावा देते हैं।

टिंडा के बीज की बोआई फरवरी से मार्च और जून-जुलाई तक होती है। कृषि अधिकारियों ने अनुसार इसकी बोआई के लिए एक बीघा में डेढ़ किलो ग्राम बीज पर्याप्त होता है। आमतौर से टिंडे की बुआई समतल क्यारियों में की जाती है किंतु डौलियों पर बोआई करना अत्यंत उपयोगी एवं लाभप्रद रहता है। इसके लिए 4 बीघा भूमि में 30 से 40 क्विंटल गोबर की खाद को अच्छे तरीके से मिलाकर खेत में बोआई से पहले समान मात्रा में बिखेर लें और खेत की अच्छी प्रकार जुताई कर तैयार करें। इसके बाद बीज को बोआई करें।

# प्रदेश की 10 हजार समितियों का अब प्रतिवर्ष होगा नियमित निरीक्षण: किलक

**जयपुर (कासं)।** सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि राज्य की सहकारी समितियों में अनियमितताओं की संभावनाओं को पूर्णतया दूर करने के लिए सहकारी समितियों का अब वर्ष में एक बार निरीक्षण किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान समिति की अवधिपार ऋण, बकाया ऋण, साधारण सभा, ऑडिट एवं रिकार्ड की स्थिति तथा समिति के कार्य संचालन को देखा जाएगा। उन्होंने बताया कि कई बार ऐसी शिकायतें प्राप्त होती हैं जिसमें किसी सहकारी संस्था या समिति में अनियमितता, दुरूपयोग या गबन के मामले प्रकाश में लाए जाते हैं। ऐसी संस्थाओं की जांच सहकारी सोसायटी अधिनियम, 2001 की धारा 55 के तहत करवाई जाती है। किलक ने बताया कि संस्थाओं में ऐसी घटनाएं नहीं हों इसको रोकने के लिए पूर्व में ही संस्थाओं के नियमित निरीक्षण करने के लिए यह कदम उठाया गया है। सहकारिता मंत्री ने बताया कि इस निर्णय से सहकारी संस्थाओं में पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा और लोगों का विश्वास भी बढ़ेगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश की लगभग 10 हजार सहकारी संस्थाएं निरीक्षण के दायरे में आएंगी। यह निर्णय सहकारी संस्थाओं की मजबूती की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। प्रमुख शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार, सहकारिता अभय कुमार ने बताया कि हमारा प्रयास है कि सभी कार्यशील सहकारी संस्थाओं का वर्ष में एक बार निरीक्षण किया जाए और उनके कार्य में जो कमियां पाई जाए उनमें समय रहते सुधार किया जा सके। इसके लिए यह प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है। उन्होंने बताया कि इस कार्य को अविलम्ब प्रारम्भ करने के लिए खण्डीय अधिकारियों एवं संबंधित उप रजिस्ट्रारों को उनके अध्यधीन सहकारी समितियों के निरीक्षण का कार्यक्रम तैयार करने एवं वित्तीय वर्ष समाप्ति तक उनका निरीक्षण पूर्ण करने के निर्देश जारी कर दिए गए हैं। संबंधित अधिकारियों को निरीक्षण के लिए न्यूनतम लक्ष्य का आवंटन कर दिए हैं जिसमें खण्डीय अतिरिक्त रजिस्ट्रार को दो, जिला उप रजिस्ट्रार को दो एवं निरीक्षक कार्यकारी को चार सहकारी संस्थाओं का निरीक्षण प्रतिमाह करना होगा।

# सब्जियों में रोगों पर ध्यान देना जरूरी

**जयपुर (कासं)।** सब्जी उत्पादक किसानों को इन दिनों लगने वाले रोगों पर खास ध्यान देने की जरूरत है। टमाटर में फलीछेदक के नियंत्रण के लिए निंबोली के सत का 5प्रश. या एनपीवी 250 एलई या बीटी 750 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करें।

फलछेदक के परजीवी ट्राइकोग्रामा किलोनिस के 50 हजार अंडे प्रति हैक्टेयर की दर से फूल बनना आरंभ होने की अवस्था से प्रति सप्ताह के अंतराल से 5-6 बार फसल पर छोड़ें। गोभी में लाल सड़न रोग बोरॉन तत्व की कमी से होता है। इसके नियंत्रण के लिए पौध रोपाई से पहले खेत में 10 किलो बोरेक्स प्रति हैक्टेयर की दर से डालें। खड़ी फसल में बोरेक्स 4 ग्राम प्रतिलीटर पानी में मिलाकर छिड़कें।

फूल व पत्ता गोभी में आरा मक्खी, फली बीटल, हीरक तितली एवं गोभी की तितली पत्तियों को खाकर फसल को नुकसान पहुंचाती है। इनकी रोकथाम के लिए फूल बनने से पहले मेलाथियॉन 5 प्रश. चूर्ण या कार्बेरिल 5प्रश. चूर्ण 20 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से सुबह या शाम भुरकाव करें।

# मुर्गी व मछली पालन बना आर्थिक समृद्धि का आधार

**भरतपुर (कासं)।** कामां पंचायत समिति क्षेत्र के लेवड़ा गांव निवासी सैफुल्ला करीब 3 साल पहले अन्य युवाओं की तरह मुश्किल से मेहनत मजदूरी कर जीवनयापन कर रहा था, क्योंकि उसके पास जो कृषि योग्य भूमि थी, उसमें खाने योग्य पैदावार भी नहीं हो पाती थी, लेकिन जब उसने लुपिन फाउंडेशन के सहयोग से मुर्गी व मछली पालन शुरू किया तो उसकी आर्थिक स्थिति में इतना बदलाव आ गया कि उसने कच्चे मकान के स्थान पर पक्का मकान बनाने के साथ अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाना शुरू कर दिया। सैफुल्ला को लुपिन फाउंडेशन की ओर से प्रशिक्षण के दौरान यह जानकारी दी गई कि अकेले एक ही प्रजाति की मुर्गीपालन करना ज्यादा फायदेमंद नहीं रहता। इस दृष्टि से उसने चैबरो, क्रॉयलर प्रजातियों को मुर्गीपालन के स्थान पर टर्की, गुनियाफॉल, कड़कनाथ का पालन शुरू किया ताकि अधिक आमदनी हो सके। सैफुल्ला ने मुर्गीपालन के लिए संस्था द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर खेत में विशाल शैड बनवाया, जिसमें मुर्गियों के चूजों को गर्मी एवं ठंड से बचाव के लिए आवश्यक उपाय भी सुनिश्चित किए गए।

टर्की, चैबरो एवं क्रॉयलर के चूजे हरियाणा के व्यापारी से लेकर इनका 3 माह तक पालन किया और उन्हें नियमित रूप से दवाइयां आदि देता रहा। इन 3 माह में सैफुल्ला को करीब 50 हजार रुपए आसानी से मिल गए, लेकिन वह इस आय से संतुष्ट नहीं था और उसने अन्य प्रजातियों का पालन प्रारंभ किया।

# एग्रो फोरेस्ट्री योजना से किसानों को होगी सालाना अच्छी आमदनी

**सीकर (विसं)।** प्रदेश के किसानों के लिए अच्छी खबर है। बैंक एवं बीमा कंपनियों की तरह अब किसानों को खेती से भी सालाना आर्थिक पैकेज मिल सकेगा। यह संभव होगा कृषि विभाग की ओर से हाल ही लॉन्च की गई एग्रो फोरेस्ट्री स्कीम से। इसमें विभाग की ओर से किसानों से छायादार व फलदार पौधे लगवाए जाएंगे। इसके लिए किसान को प्रोजेक्ट लागत का 50 फीसदी खर्चा कृषि विभाग की ओर से वहन किया जाएगा। व्यापक स्तर पर कारोबार करने वाले किसानों के लिए नर्सरी प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। इसमें लघु, मध्यम व हाईटेक अलग-अलग 3 श्रेणी की नर्सरी तैयार करवाई जाएगी, जिनके माध्यम से किसान सालाना स्थायी आमदनी हासिल कर सकेंगे। एग्रीकल्चर ऑफिसर रामचंद्र बाजिया के अनुसार स्कीम का संचालन 4 साल तक होगा।

इसमें किसान को पहले आओ पहले पाओ के आधार पर लाभ दिया जाएगा। टारगेट समाप्त होने की स्थिति में किसान को दूसरे साल वरीयता से स्कीम में शामिल किया जाएगा। प्रतिवर्ष हर जिले को कार्ययोजना के लिए नए लक्ष्य जारी किए जाएंगे। एग्रो फोरेस्ट्री प्रोजेक्ट में आवेदन के लिए किसान के पास सिंचित जमीन होना जरुरी है। दूसरा वह खेती से जुड़ा हुआ हो। नर्सरी प्रोजेक्ट में किसान के पास न्यूनतम आधा हैक्टेयर जमीन होनी चाहिए।

## प्रोजेक्ट की लागत का आधा पैसा देगी सरकार

प्रोजेक्ट गाइड लाइन में लघु नर्सरी की इकाई लागत 14 लाख रुपए, मध्य दर्जे की नर्सरी की इकाई लागत 20 लाख व हाईटेक नर्सरी की इकाई लागत 40 लाख रुपए तय की गई है। प्रोजेक्ट लागत का 50 फीसदी खर्चा किसान को कृषि विभाग देगा। यानी लघु नर्सरी के लिए 7 लाख, मध्यम दर्ज की नर्सरी के लिए 10 लाख और हाईटेक नर्सरी के लिए किसान को 20 लाख रुपए तक की सहायता दी जाएगी। यह राशि 4 साल में दी जाएगी। पहले साल 40 फीसदी व अगले 3 साल तक 20-20 फीसदी होगी।

# महापौर ने पार्षदों को बनाया स्वच्छता का ब्रांड एम्बेसेडर

**जयपुर।** महापौर डॉ. अशोक लाहोटी ने बुधवार को नगर निगम जयपुर मुख्यालय में पार्षदों को स्वच्छता का ब्रांड एम्बेसेडर घोषित किया।

इस अवसर पर महापौर डॉ. लाहोटी ने पार्षदों भगवत सिंह देवल, महेश कलवानी, मोहम्मद शफीक कुरैशी, श्रीमती कमलेश कासोटिया, हरिश अजमेरा, भंवर सैनी, संजय जांगिड़ को स्वच्छता के ब्रांड एम्बेसेडर का बैज लगाया और स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

Hindchem Corproation

SUPPER POTASSIUM HUMATE SHINY FLAKES

ZINK EDTA

SEAWEED EXTRACT FLACKES

N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER

AMINO ACID

AMINO+HUMIC SHINY BALLS
FERROUS SULPHATE19%
MAGNESIUM SULPHATE 9.6%
FERROUS EDTA12%
E.D.T.A. ACID
CAMPHOR
SODIUM BICARBONATE
EDTA DISODIUM
CITRIC ACID MONOHYDRATE
MANGANESE SULPHATE 30.5%
SULPHUR 90% -80WDG
BORON 20%
BRONOPOL 25%
PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry
Tel. 022-66998360/61
Fax-022-66450908
Email id: mamta@hindchem.com
Mo. 9004744077

# राजपथ पर दिखी राजस्थानी संस्कृति की अमिट झलक

**जयपुर (कासं)।** नई दिल्ली के राजपथ पर आयोजित 69 वें गणतंत्र दिवस समारोह के भव्य आयोजन में एक और जहाँ देश व दुनियां को भारत के शौर्य एवं सांस्कृतिक झांकी का शानदार प्रदर्शन देखने को मिला, वहीं राजस्थान की बहुरंगी संस्कृति की यादगार झलक भी देखने को मिली। समारोह में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और दस आसियान देशों के राष्ट्राध्यक्षों की गरिमामय उपस्थिति में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान का पंचरंगी जोधपुरी साफा पहन कर प्रदेश का मान बढ़ाया। इसी प्रकार आसियान देशों के प्रतिनिधि अपने जीवन साथियों के साथ राजस्थानी बन्धेज के दुपट्टे पहने दिखे। परेड में शामिल विश्व के एकमात्र कैमल बैंड दस्ते में शामिल पश्चिम राजस्थान के बी एस एफ के जवानों ने सभी का मन मोह लिया। साथ ही सीमा सुरक्षा बल के जवानों और रंग बिरंगे परिधानों से सजे धजे ऊँटो के साथ कुलदीप जे.चौधरी के नेतृत्व में निकले बी एस एफ के ऊँट दस्ते ने राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत धुन के साथ राजपथ पर अपनी धाक जमाई।

# बेहद जरुरी है पॉलीहाउस का रख-रखाव

**राजेश सैनी ( हरित गृह विशेषज्ञ )**
**इन्टरनेशनल हॉर्टिकल्चर इनोवेशन एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर दुर्गापुरा, जयपुर ( राज. )**

कृषक को अपने आस-पास तेजी से घटने वाली घटनाओं पर ध्यान रखना चाहिए नहीं तो वह विकास की दौड़ से बाहर हो सकता है। ऐसी ही एक नई तकनीक है पॉलीहाउस (ग्रीन हाउस)। पॉलीहाउस लगाकर कृषक अपनी आमदनी बढ़ा सकता है। इस तकनीक का प्रयोग कर कृषक एक हैक्टेयर के भी दसवें हिस्से के बराबर पॉलीहाउस बनाकर एक हैक्टेयर की खेती से होने वाली आय के बराबर लाभ कमा सकते हैं परन्तु इसके लिए व्यावहारिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण लेना अत्यन्त आवश्यक है।

1008 वर्ग मीटर की पॉलीहाउस परियोजना लगभग 9.5 लाख रूपये में तैयार कर उत्पादन प्रारम्भ किया जा सकता है। सरकार द्वारा इस पर 50-75 प्रतिशत सब्सिडी भी देय है। ऐसे में पॉलीहाउस लगाना आसान है परन्तु इसका रख-रखाव बहुत ही अहम हो जाता है। एक पॉलीहाउस की उम्र लगभग 15 से 20 वर्ष तक आंकी गई है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कृषक के लिए कि वह अपने पॉलीहाउस का रख-रखाव ठीक प्रकार से करें।

**आइये जानते हैं पॉलीहाउस सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:-**

- अगर किसी घटक एवं जोड़ों के नट बोल्ट ढ़ीले पड़ गए हों तो उसकी जांच करें एवं उन्हें कस लें। यदि नट बोल्ट टूट गए हों या फिसल रहे हों तो अच्छी गुणवत्ता के नट बोल्ट लगाएं और अगर स्वयं सम्भावना हो तो निर्माता से सम्पर्क कर ठीक करवाएं या बदलवाएं। साथ ही अगर सम्भव ना हो तो कम्पनी ग्रीन हाउस निर्माण में लगी हुई कम्पनियों से ए.एम.सी. (एनुवल मेनटेनेंस कॉन्ट्रेक्ट) की भी बात करें। साथ ही इंश्योरेंस कम्पनी द्वारा ढांचे एवं पॉलीफिल्म का बीमा करवाएं।
- सही ओरिएन्टेशन में हरित गृह का निर्माण: गटर का पानी निकालने वाली नाली की दिशा हमेशा उत्तर-दक्षिण दिशा में होनी चाहिए। नए गटर में किसी प्रकार का जोड़ नहीं होना चाहिए।
- पुराने गटर से पानी का स्राव हो रहा है तो उसमें डामर पिघला कर उसकी सतह पर डालें। पहली बरसात में पानी का स्राव होने वाली जगह चिन्हित कर लें और बरसात रुकने पर उपरोक्त कार्यवाही करें।
- टेलीस्कोपिक फाउन्डेशन होना चाहिए ताकि वायु का दाब कॉलम पर ना पड़े और ढांचे में लचीलापन रहे। पाइप जमीन में गाड़ें, सीमेंट कंकरीट से भरें और रोज तराई करें। 76 मि.मी. व्यास वाला पाइप उसके ऊपर चढ़ाएं और यह पाइप सीमेंट कंकरीट की सतह पर टिका होना चाहिए। नट 2 जगह बोल्ट से कसा होना चाहिए। किसी प्रकार की वेल्डिंग दोनों पाइप्स के बीच नहीं होनी चाहिए। साथ ही ढांचे की पंक्तिबद्धता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जैसे सभी कॉलम, लाइन से होने चाहिए क्लैम्प्स वगैरह उचित अवस्था में पंक्तिबद्ध होने चाहिए। ढांचा तैयार करने के लिए काम में लिए गए पाइप्स, क्लैम्प्स, आर्क इत्यादि चीजें किसी प्रकार से मुड़ी हुई नहीं होनी चाहिए।
- हरित गृह का दरवाजा, सहज रूप से खुलना एवं बंद होना चाहिए। अगर इसमें परेशानी आ रही हो तो दरवाजों की रेल, पुली और बीयरिंग की पंक्तिबद्धता को जांच लें। साथ ही रेल, बीयरिंग और पुली को ग्रीस लगाएं ताकि दरवाजा सहज रूप से खुल सके। महीने से एक या दो बार उपरोक्त प्रक्रिया को अपनाएं। साथ ही साइड वेन्ट्स के हैण्डल्स, शेड नेट के व्हील की भी उचित ग्रीसिंग करें ताकि वह जंग से जाम ना हो और उनका चलन ठीक तरीके से हो। अगर गटर से बरसात के दौरान आने वाले अमृत रूपी पानी को संचय पाइप्स की मदद से टैंक से कर लिया जाए तो इस एकत्रित पानी का उपयोग पॉलीहाउस में लगाए जाने वाली शाक-सब्जियों या कट फ्लॉवर की खेती के रूप में किया जा सकता है। जिन क्षेत्रों से पानी का पी. एच. एवं ई. सी. ज्यादा है वहां वर्षा के संचित पानी एवं उस क्षेत्र पर उपलब्ध पानी को आपस में मिला कर शाक-सब्जियों या कट फ्लॉवर उत्पादन के लिए काम में लिया जा सकता है।

- खेंचकर बांधी गई पॉली फिल्म दूर से कांच के समान दिखाई देती है। हमेशा धूप आने के पश्चात ही पॉली फिल्म की बंधाई का काम करना चाहिए। अक्सर देखने में आता है कि सर्दियों के समय ठण्डे मौसम में बांधी गई पॉली फिल्म गर्मियों के मौसम में ढीली पड़ जाती है और बाद में हवा उसमें घर कर लेती है और वह फट जाती है।
- प्लास्टिक प्रदार्थ होने के कारण तापीय फैलाव गुणांक ऊंचा होता है। इससे गर्मी के मौसम में पॉलीथिन फिल्म ढीली पड़ जाती है। ऐसे में आवश्यकतानुसार इसे फिर से कसा जाना चाहिए।
- पॉलीहाउस में लोहे की गेल्वेनाइज्ड पाइप्स का प्रयोग किया जाता है जो कि गर्मियों से गर्म हो जाती हैं और पॉली फिल्म उससे सम्पर्क में आती है। वह वहां से कमजोर हो जाती है। अत: ऐसी पाइप्स पर सफेद पेंट कर देना चाहिए ताकि वह ज्यादा गर्म ना हो पाएं।
- पर्दों को आंधी या तेज हवा चलने पर बंद कर देना चाहिए। अगर उत्तर दिशा से तेज हवा आ रही है तो पहले उत्तर दिशा का पर्दा बन्द करें और बाद में बाकी अन्यथा पॉलीफिल्म फटने का डर रहता है। साथ ही ऐसी परिस्थिति में दरवाजे भी बंद करें। ऐसे में पॉलीहाउस बाहर का एरोडायनेमिक्स आकर भी आंधी एवं तेज हवाओं से बचाने में अहम भूमिका अदा करना।
- कभी-कभी आंधी आने या तेज हवा चलने की वजह से लॉकिंग प्रोफाइल ढीली पड़ जाती है और जिकजेक स्प्रिंग प्रोफाइल पट्टी से बाहर निकल जाती है और पॉलीफिल्म बाहर निकल आती है। ऐसे में आंधी (तेज हवाएं) बंद होने पर पुन: नई स्प्रिंग फिट करनी चाहिए।
- पॉलीफिल्म का रोल खोलते वक्त ध्यान रखें कि नीचे की सतह समतल हो और किसी प्रकार के कंकड़-पत्थर ना हों। साथ ही उस पर चलना नहीं चाहिए वरना उस पर निशान हो जाते हैं और पॉलीफिल्म कमजोर पड़ जाती है जिससे फटने का डर बढ़ जाता है। पॉलीफिल्म पर इनर साइड एवं आउटर साइड लिखा होता है। उसी प्रकार से उसे लगाया जाना चाहिए।
- समयानुसार महीने में कम से कम एक बार पॉलीफिल्म की धुलाई पानी एवं सर्फ के पानी के घोल से करनी चाहिए। यह कार्य गटर पर चलकर फूट पम्प द्वारा किया जा सकता है। हरित गृह का रख-रखाव एवं मरम्मत करते वक्त सबसे महत्वपूर्ण बात है स्वयं की सुरक्षा। अत: अपनी सुरक्षा के लिए यथासम्भव हर प्रकार के जरूरी कदम उठाएं जैसे बिना किसी सहारे के घटकों को न हटाएं, फस्ट एड बॉक्स पॉलीहाऊस में रखें, इत्यादि।
- गर्मियों की शुरूआत होते ही प्रकाश की तीव्रता एवं तापमान कम करने के लिए सफेदी या सफेद डिस्टेम्पर की पुताई पॉलीहाउस की पॉलीफिल्म पर बाहरी रूप से करें। इससे 3 से 4 डिग्री सेल्सियस तापमान एवं 20 से 25 किलो लक्स प्रकाश की तीव्रता कम हो जाती है। 1008 वर्गमीटर के पॉलीहाउस के लिए 40 किलोग्राम चूने को 300 लिटर पानी में मिलाकर ऊपरी प्लास्टिक पर फूट पम्प स्प्रे द्वारा गटर पर चलकर स्प्रे किया जाता है। यह कोटिंग करने से पूर्व पॉलीफिल्म पानी से धोई जाती है। साथ ही उपरोक्त घोल से फेविकोल या गोंद मिलाकर चिपचिपाहट बढ़ाई जाती है। मार्च के अन्तिम सप्ताह या अप्रैल के प्रथम सप्ताह में आमतौर पर यह कार्य किया जाता है। आमतौर पर 15 जुलाई पश्चात् या मानसून आने पर स्वयं साफ हो जाती है। बरसात ना होने पर पानी से धो दी जाती है।
- अप्रोन की पॉलीफिल्म को 20-45 सें.मी. मिट्टी के अन्दर दबाना चाहिए।
- पॉलीफिल्म के आसपास बड़े साइज का बोल्ट ना लगा हो। अगर पाइप को या हॉकी में या क्लैम्प में लगा है तो इससे पॉलीफिल्म फट या कट सकती है। ऐसे में बोल्ट की साइज काट कर कम कर देनी चाहिए।
- पॉलीफिल्म फिटिंग करते समय एल्यूमीनियम पट्टी एवं जिकजेक स्प्रिंग जो कि गेल्वेनाइज्ड हो, लगाई जानी चाहिए। पॉलीफिल्म खेंचकर लगानी चाहिए। वह ढीली ना हो और ना ही उसमें सलवटें हों अन्यथा हवा उसमें घर कर जाएगी और वायु दाब से फट जाएगी।
- कभी भी किसी कारणवश पॉलीफिल्म में कट लग जाए तो उस पर तुरन्त पराबैंगनी स्थिरीकृत पारदर्शी टेप द्वारा रिपेयर करनी चाहिए।
- पॉलीहाउस का बीमा अनिवार्य कराना चाहिए।
- **वायु प्रतिरोधी पेड़ लगाएं:** पॉलीहाउस के पश्चिम एवं पूर्वी छोर पर, ढांचे से लगभग 6 से 10 मीटर की दूरी पर वायु प्रतिरोधी पेड़ों की दो कतार लगा दी जाती हैं जिसमें वायु की तीव्रता कम होती है। तिकोने तरीके से 5 मीटर × 2.5 मीटर या 3 मीटर × 3 मीटर की दूरी पर लगाएं।
- आमतौर पर गेल्वेनाइज्ड पाइप्स से बने पॉलीहाउस के ढांचे की व्यावसायिक उम्र 15 से 20 वर्ष होती है और पॉलीथिन फिल्म जो काम में ली जाती है उसे तीन वर्ष के अन्दर बदलना पड़ता है। अगर ठीक ढ़ंग से पॉलीहाउस का रख-रखाव एवं प्रबंधन किया जाए तो उपरोक्त लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। साथ ही प्राकृतिक आपदाओं के दौरान कम से कम नुकसान होने की सम्भावनाएं रहती हैं। अगर हम उपरोक्त वर्णित छोटी-छोटी बातों का ख्याल रखें और बीमा कम्पनियों से बीमा करवा कर विकासशील कृषक अपना जोखिम काफी हद तक कम कर सकता है वो भी बहुत कम प्रीमियम भर कर।

# अफीम की खेती को बेहतर बनाने के कुछ उपाय

संतरा हरितवाल, नीलू कुमारी, कौशल्या चौधरी, विवेक शर्मा
राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा विद्यावाचस्पति

**खेत में खाद और उर्वरक का प्रयोग :** अफीम का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए खेत में खाद और उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए 7 इसके लिए 20 से 30 किवंटल अच्छी तरह से सड़ाई हुई गोबर की खाद को खेत की तैयारी करते समय डालें। इसके आलावा 38 किलोग्राम यूरिया , सिंगल सुपरफास्ट की 50 किलोग्राम की मात्रा और म्यूरेट ऑफ पोटाश की आधा किलोग्राम की मात्रा और गंधक की 10 भरी की मात्रा को एक साथ मिलाकर खेत में डालें। अफीम की अच्छी फसल और अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उचित प्रकार की मृदा का उपयोग करना चाहिए। इसके लिए खेत में लोबिया और सनई को हरी खाद को बोना चाहिए।

**अफीम की फसल पर लगने वाले रोग:**

**रोमिल फफूंदी:** रोमिल की बीमारी एक बार जिस खेत में हो जाती है उस खेत में अगले तीन सालों तक अफीम की खेती नहीं करनी चाहिए। इस बीमारी की रोकथाम करने के लिए एक उपाय है जिसका वर्णन इस प्रकार से है।

**अफीम की खेती को बेहतर बनाने के कुछ उपाय**

**रोकथाम करने का उपाय :** नीम की पत्तियों का काढ़ा तैयार करें। इस काढ़े की 500 मिलीलीटर की मात्रा में माइक्रो झाझम की 25 मिलीलीटर की मात्रा को मिलाकर एक अच्छा सा घोल बनाएं। अब एक पम्प में पानी भर लें और तैयार घोल को पम्प में मिला दें और फसलों पर छिड़काव करें। इस प्रकार के घोल का कम से कम 3 बार छिड़काव करें। एक बुआई से लगभग 30 दिन के बाद फिर 50 दिन के बाद और आखिरी 70 दिन के बाद छिड़काव करें। इस रोग से मुक्ति मिल जाती है।

**चूर्णी फफूंदी :** पौधे में इस रोग का प्रभाव दिखने लगे तो फरवरी के महीने में ढाई किलोग्राम गंधक को पानी में मिलाकर एक घोल बनाएं। इस प्रकार से तैयार घोल को एक हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। चूर्णी नामक फफूंदी से निजात मिल जाती है।

**डोडा लट :** अफीम के पौधे में फूल आने से पहले और डोडा लगने के बाद माइक्रो झाझम की 500 मिलीलीटर की मात्रा को 400 से 500 लीटर पानी में मिलाकर किसी पम्प में डालकर फसलों पर छिड़काव करें। यह मात्रा एक हेक्टयर भूमि के लिए पर्याप्त है।

अफीम की अच्छी फसल और अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए कुछ जरूरी जानकारी निम्नलिखित है।

-हमेशा अच्छी किस्म की बीजों का उपयोग करें।

-बीजों को उपचरित करके बुआई करें।

-फफूंदी नाशक और कीटनाशक दवाओं का प्रयोग समय पर करें।

-सूना ठंडे मौसम में ही करें।

-खसखस उत्पादन करने के लिए डोडा के पूरी तरह पकने पर ही कटाई करें। बीजों को अधिक गहराई में ना बोयें।

-कली , पुष्प डोडा अवस्थाओं में सिंचाई अवश्य करें।

-पौधे में काली मिस्सी या कोडिया से बचाव करने के लिए दवा का छिड़काव 20 से 25 दिन पर अवश्य करें।

-बीजों को समय पर बोये।

सबसे अच्छी और खास बात जिससे हम अफीम का अच्छा उत्पादन कर सकते है। किसान को यदि किसी भी तरह की परेशानी होती है तो उसे किसान हेल्पलाइन से सम्पर्क करना चाहिए। इसके आलावा किसानों को बीजों का उपचारित करके बुआई करनी चाहिए। मिट्टी के परिक्षण के आधार पर ही उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए।

# बीकानेर से शुरू होगा सोलर चरखा अभियान : सिंह

**बीकानेर (विसं)।** केन्द्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम राज्य मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा है कि अभिनव योजना सोलर चरखा अभियान की शुरूआत बीकानेर से की जाएगी। सिंह रविवार को यहां पोलिटेक्निक महाविद्यालय मैदान में भावना मेघवाल ट्रस्ट की ओर से आयोजित सामूहिक विवाह एवं प्रतिभा सम्मान समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सोलर चरखा अभियान के जरिए कतिन की आय 10 से 15 हजार रुपए महीने हो जाएगी। अंबर चरखे को तकनीकी से जोड़ दिया गया है, इससे कतिन की आमदनी बढ़ी है। उन्होंने मंत्रालय की माई एवं गाई योजना की जानकारी देते हुए बताया कि कतिनों को सशक्त करने के लिए माई और गौमूत्र एवं गोबर पर आधारित उत्पादों के लिए गाई की शुरुआत की जा रही है। अगले कुछ महीनों में ये योजनाएं लागू हो जाएंगी, जिससे करोड़ों लोगों को रोजगार मिलेगा। उन्होंने कहा कि जिन परिवारों में घूंघट प्रथा नहीं होगी, वहीं सोलर चरखा एवं सोलर लूम दिया जाएगा।

समारोह में केन्द्रीय जल संसाधन राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने बताया कि ट्रस्ट की ओर से वर्ष 2006 से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया जा रहा है, यह बारहवां सामूहिक विवाह समारोह है। उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग से ही घूंघट प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जा सकेगा।

## कृषि सलाह
## किसान भाई ध्यान देवें

**गेहूं, चना:** गेहूं की सामान्य समय पर बोई गई फसल में गांठ बनते समय ( बुवाई के 60-65 दिन की अवस्था) पर तीसरी सिंचाई एवं देरी से बोये गये गेहूं में फूटान की अवस्था (40-45 दिन) पर दूसरी सिंचाई तथा चने की फसल में फलियां आते समय सिंचाई देने का यह उपयुक्त समय है ।

**चना एवं पछेती मटर:** चने एवं पछेती मटर की फसल में फली छेदक लट (हेलियोथिस) के प्रकोप की सम्भावना है । इस कीट के नियंत्रण हेतु बारानी चने की फसल में फली लगने के बाद मैलाथियॉन 5 प्रतिशत या करबोरिल 5 प्रतिशत चूर्ण का 20 से 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें । पानी की सुविधा वाले क्षेत्रों में फूल आने के समय मैलाथयॉन 50 ई.सी. सवा लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. एक लीटर या एन.पी.वी. 250 एल.ई. 125 मि. ली. एवं 625 मि. ली. का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।

**जीरा, मटर, सौंफ, मैथी एवं धनिया:** जीरा, मटर, सौंफ मैथी एवं धनिया की फसल में छाछया (पाउडरी मिल्डयू) के प्रकोप की सम्भावना है। इस रोग में पौधे की पत्तियों एवं टहनियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देता है । रोग का प्रकोप दिखाई देने पर 25 किलो गन्धक के चूर्ण का भुरकाव करें अथवा 2 ग्राम घुलनशील गन्धक का एक मि.ली. कैराथियॉन एल.सी. या केलेक्सिन एक मि.ली. या डाइफेनोकोनाजोल (स्कोर 25 ई.सी.) का 0.5 मि.ली. का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें ।

**आम:** आम की फसल में हरा तैला (आम का पूदका) कीट के प्रकोप की सम्भावना है। इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर क्यूनालफॉस 20 ए.एफ या मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

**पशु:** पशुओं को खुरपका एवं मुंहपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवायें ।


## सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

### सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : .....

संस्था का नाम : .....

पूरा पता : .....

ग्राम : .....तहसील .....

जिला ..... राज्य ..... पिन कोड

दूरभाष कार्य : ..... निवास .....

### सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 तीन वर्ष 351 पांच वर्ष 501

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए ( अंकों में ) शब्दों में .....

बैंक का नाम ..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक ..... दिनांक .....

स्थान ..... प्रतिनिधि का नाम ..... हस्ताक्षर सदस्य .....

दिनांक .....

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील


सृष्टि एग्रो
ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड ( प ), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

# कृषि विभाग में होगी 750 कृषि पर्यवेक्षकों की भर्ती : कृषि मंत्री

**जयपुर (कासं)।** कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने बताया कि कृषि विभाग में 750 कृषि पर्यवेक्षकों की भर्ती की जाएगी। इसके साथ ही 290 सहायक कृषि अधिकारी, 20 सांख्यिकी अधिकारी, 38 सहायक सांख्यिकी अधिकारी के पदों पर भर्ती की जाएगी। उन्होंने बताया कि इसके लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग व अन्य रिक्रूटमेंट एजेंसियों को अभ्यर्थना भिजवा दी गई है। सैनी राज्य कृषि प्रबंध संस्थान, दुर्गापुरा में राजस्थान एग्रीकल्चर स्टूडेंट एसोसिएशन की ओर से आयोजित कृषि विद्यार्थी एवं प्रतिभा खोज परीक्षा 2018 के सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आने वाला समय कृषि का होगा और इसमें रोजगार की अनंत संभावनाएं हैं क्योंकि खाद्यान्न की जरूरत मानवजीवन के लिए हमेशा बनी रहेगी। इस क्षेत्र में काम करने वाला व्यक्ति रोजगार प्रदाता बनने की क्षमता रखता है। कृषि मंत्री ने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि कृषि क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा दें। खाद्यान्न में घटती गुणवत्ता और पोषकतत्वों पर चिंता जताते हुए उन्होंने इस क्षेत्र में नए शोध की आवश्यकता जताई। किसानों को आज परम्परागत खेती के साथ कृषि में हो रहे नवाचारों को अपनाने की जरूरत है। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे के 'पर ड्रॉप-मोर क्रॉप' के विजन को साकार करने के लिए राज्य में वाटर मैनेजमेंट पर आधारित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाने के प्रयास होंगे।

# मूंग, मूंगफली एवं उड़द की खरीद
# सभी पंजीकृत किसानों से खरीद के प्रयास: किलक

**जयपुर (कासं)।** किसानों के हित में निर्णय लेते हुए राज्य सरकार ने मूंग, मूंगफली एवं उड़द की खरीद अवधि 7 फरवरी तक आगे बढ़ाने के लिए भारत सरकार को पत्र लिखकर अनुरोध किया गया है। यह जानकारी सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने दी। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे किसानों के कल्याण के लिए सदैव तत्पर है एवं उनका सपना है कि सशक्त किसान से ही सशक्त राजस्थान का निर्माण होगा और इसी सोच के तहत निर्णय लिए जा रहे हैं। किलक ने बताया कि प्रदेश सरकार पूर्ण रूप से किसानों के प्रति संवदेनशील है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार द्वारा मूंगफली खरीद की अवधि 24 जनवरी तथा मूंग एवं उड़द खरीद की अवधि 26 जनवरी, 2018 निर्धारित की गई थी। उन्होंने बताया कि हमारा प्रयास है कि किसानों को उनकी फसल का वाजिब दाम मिले इसके लिए पूर्व में भी किसानों से की जा रही कृषि जिन्सों की खरीद अवधि को 90 दिन से बढ़ाकर 120 दिन किया था। सहकारिता मंत्री ने बताया कि जिन किसानों ने अपनी उपज बेचने के लिए ऑनलाइन पंजीयन करवाया था और वे किसान तय अवधि में फसल का बेचान नहीं कर पाए हैं, उसे सभी किसानों से उनकी उपज की खरीद को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार से खरीद अवधि की सीमा 7 फरवरी तक बढ़ाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। किलक ने बताया कि प्रदेश के इतिहास में पहली बार है जब मूंग, मूंगफली, उड़द एवं सोयाबीन की 2700 करोड़ रुपए से अधिक की रिकार्ड खरीद की गई है और लगभग 3 लाख किसानों से 5 लाख 25 हजार मीट्रिक टन से अधिक की खरीद कर लाभान्वित किया गया है।

**खरीद में तत्परता बरतें:** प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने गुरूवार को यहां राजफैड में प्रदेश में चल रही मूंग एवं उड़द की खरीद को लेकर अधिकारियों को निर्देश दिए कि 26 जनवरी तक होने वाली खरीद में तत्परता बरते एवं जिन किसानों को तुलाई हेतु दिनांक आवंटित कर दी गई है उनसे निर्धारित अवधि में खरीद सुनिश्चित की जाए।

# प्याज आवश्यक वस्तुओं में शामिल

**जयपुर (कासं)।** प्याज की बढ़ती हुई कीमतों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से भारत सरकार के निर्देशानुसार प्याज को आवश्यक वस्तुओं में शामिल किया गया है। उप सचिव अंजू राजपाल ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा प्याज को राजस्थान व्यापारिक वस्तु (अनुज्ञापन एवं नियंत्रण) आदेश,1980 की अनुसूची-द्वितीय में सम्मिलित किये जाने की अधिसूचना 24 जनवरी,2018 को जारी की जा चुकी है। जारी की गई यह अधिसूचना 31 मार्च,2018 तक प्रभावी रहेगी। प्रदेश के जिला कलक्टर प्याज के भावों एवं स्टॉक की उपलब्धता संबंधी जानकारी कराकर आवश्यक कार्यवाही या निर्देश जारी कर सकते हैं।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु
सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

उदित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान सरकार द्वारा उर्वरक अब मान्यता प्राप्त दरों व अनुदान पर उपलब्ध

फर्टिलाइजर
1. जिंक सल्फेट 21 प्रश.
2. जिंक सल्फेट 33 प्रश.
3. फेरस सल्फेट 19 प्रश.
4. कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
5. मैग्नीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.

बायो फर्टिलाइजर
1. राइजोबियम पाउडर
2. एजेटोबेक्टर पाउडर
3. पी.एस.बी. पाउडर

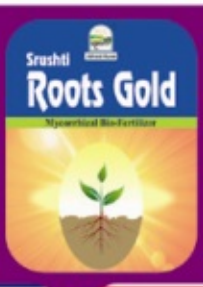

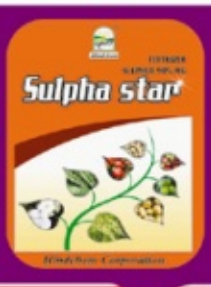

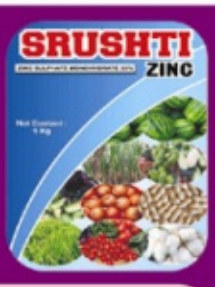


FERTILIZER
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

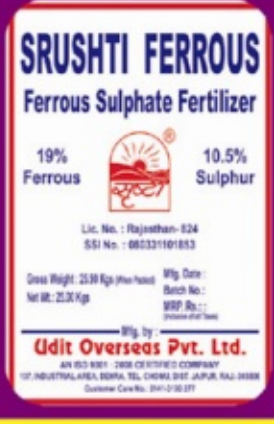

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

WELCOME INQUIRY Contact : 7975653498 (Rajesh Sharma)

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com